साहित्यिक गजेटियर

जिला : छतरपुर (म.प्र.)

साहित्यिक गजेटियर

जिला : छतरपुर (म.प्र.)

24-12-18
निजी प्रति

संग्रहकर्त्ता

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त `बरसैंया'

सम्पादक

डॉ. उमेश कुमार सिंह

प्रकाशक

साहित्य अकादमी

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल

साहित्यिक गजेटियर

जिला : छतरपुर (म.प्र.)

सम्पादक : डॉ. उमेश कुमार सिंह

सर्वाधिकार : **प्रकाशनाधीन**

प्रकाशक : **साहित्य अकादमी (सं.प.)**
मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग,
संस्कृति भवन, बाण गंगा चौराहा, भोपाल-3
फ़ोन : 0755 : 2554782

विक्रम संवत : **२०७५**

संस्करण : **प्रथम 2018**

मूल्य : ₹ 200/- **(रूपये दो सौ मात्र)**

मुद्रण : **मध्यप्रदेश माध्यम**, अरेरा हिल्स,
भोपाल (म.प्र.)

सम्पादक की कलम से...

सामान्य रूप से गजेटियर एक भौगोलिक कोष माना जाता है, जिसका सम्बन्ध एक मानचित्र या एटलस से होता है। इसके माध्यम से सामान्यजन भौगोलिक, सामाजिक और वैज्ञानिक तथ्यों की जानकारी प्राप्त करते हैं। यह जानकारी किसी क्षेत्र, राष्ट्र या महाद्वीप की हो सकती है। हैलीनिष्टिक ऐरा से एंशियन्ट ग्रीक में गजेटियर का अस्तित्व प्राप्त होता है। पहली शताब्दी के आस-पास चीन का गजेटियर सामने आता है। इसी तरह यूरोप में आधुनिक गजेटियर उनके विभिन्न ग्रंथालयों में प्राप्त होते हैं। कुल मिलाकर नाना प्रकार के विषयों को लेकर वर्तमान में गजेटियर देखने और पढ़ने को मिलते हैं। सामान्य रूप से गजेटियर एक ऐसी पुस्तक या सूचनाधारित (Alphabatically arranged) दस्तावेज के रूप में सामने आती है, जिसमें सभी प्रकार के आधुनिक ज्ञान की बातें नई पीढ़ी को प्राप्त होती है। शब्द कोष में गजेटियर को हिन्दी विवरणिका, भौगोलिकी अथवा जगहों के नाम की सूची भी कहा जाता है।

साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् ने 'साहित्यिक गजेटियर' तैयार करने का एक सद्प्रयास प्रारम्भ किया है। यह निरन्तर प्रक्रिया है।

गजेटियर इन्दौर, भोपाल, हरदा आदि जिलों के भी लिखाने का प्रस्ताव तैयार किये गये हैं। मुझे विश्वास है यह कार्य उत्तरोत्तर बढ़ता जाएगा।

प्रो. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया' जी ने पूरी निष्ठा और लगन के साथ इस गजेटियर को तैयार करने में महती भूमिका निभाई।

मुझे पूरा विश्वास है कि प्रो. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया' का यह श्रम न केवल छतरपुर बल्कि देशभर के साहित्यकारों के लिये लाभकारी होगा। विविध अध्यायों में लिपिबद्ध यह गजेटियर छतरपुर के सुदूर अतीत से वर्तमान तक का विहंगम दर्शन है।

संकलनकर्त्ता ने जहाँ कालक्रमानुसार साहित्यकारों का परिचय देने का प्रयत्न किया है वहीं हिन्दी, उर्दू ही नहीं बल्कि संस्कृत के आचार्यों को भी रेखांकित किया है। प्रगति परख नवयुगीन चेतना के साहित्य सर्जकों से लेकर धर्म, विज्ञान, छंद-अछंद के संधि, आदर्श और यथार्थ का स्वच्छंद साहित्य, देश, दशा व दिशा के चितेरे नवहस्ताक्षरों को भी रेखांकित करता है।

इस गजेटियर की यह विशेषता है कि साहित्य के आधार पक्षों को स्पर्श करते हुये छतरपुर की आध्यात्मिक प्रतिभाओं के साथ विशिष्ट शिक्षा शास्त्रियों का भी स्मरण किया है। फिर भी इसे पूर्ण नहीं कहा जा सकता। यह निरंतर प्रक्रिया है। अतः सुधी पाठकों से आग्रह है कि यदि कोई सामग्री जोड़नी या घटानी है तो प्रमाण के साथ अकादमी को उपलब्ध करायें ताकि आगामी संस्करणों में उसे सुधारा जा सके।

माननीय मंत्री संस्कृति श्री सुरेन्द्र पटवा एवं श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव अपर मुख्य सचिव का मार्गदर्शन सदैव बना रहा है। अकादमी प्रो. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया', प्रो. बहादुर सिंह परमार सहित उन समस्त महानुभावों की आभारी है, जिनका किसी न किसी रूप में सहयोग प्राप्त हुआ है।

सादर।

-डॉ. उमेश कुमार सिंह

पूर्वकथन

मध्यप्रदेश के प्रत्येक जिले का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गजेटियर तैयार कराने की योजना अत्यंत महत्त्वपूर्ण और अनूठी है। इसके पूर्व जिले के गजेटियर तो तैयार किए जाते रहे किन्तु उसमें साहित्य और संस्कृति को समुचित स्थान नहीं मिल पाया। फलतः हम जिले के इतिहास, भूगोल, राजस्व, कृषि, जनसंख्या आदि के आँकड़ों से तो परिचित होते रहे किन्तु साहित्य-संस्कृति का पक्ष छूटता गया। पहली बार साहित्य-संस्कृति पर केन्द्रित गजेटियर तैयार कराने की मौलिक योजना के लिए मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग तथा साहित्य अकादमी बधाई की पात्र है। नई पीढ़ी को अपने साहित्य-संस्कृति से परिचित कराना अत्यंत आवश्यक है।

यह कार्य सरल नहीं, अपितु अत्यंत कठिन है। राजस्व संबंधी गजेटियर के लिए सरकारी विभाग महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं, परन्तु साहित्य व संस्कृति के लिए कोई ऐसा केन्द्र नहीं है जहाँ से सारी जानकारी मिल सके। जिलों की साहित्य-संस्कृति की जानकारी देने वाले पर्याप्त ग्रंथ भी नहीं है। समय-समय पर प्रकाशित हुए स्फुट ग्रंथ, यत्र-तत्र प्रकाशित स्मारिकाएँ तथा कुछ पुराने लोग ही उसके आधार है। सामान्यतः लोगों में उसकी महत्ता के प्रति जागरुकता भी नहीं है। परिणामतः लोग उत्साह से आगे आकर सामग्री जुटाने में सहयोग नहीं करते। संग्रहकर्ता को स्वतः सारा दायित्व निभाना पड़ता है। यह कार्य बड़ा श्रम-साध्य, समय-समय और व्यय-साध्य है। लेखकों-कवियों का जन्मस्थान, जन्मतिथि पिता का नाम, रचनाकाल, रचनाओं को नाम, प्रकाशन वर्ष तथा रचनाकारों-कलाकारों की विशिष्ट उपलब्धियों आदि का प्रामाणिक विवरण देना सहज नहीं है।

मैंने पुराने ग्रंथों, स्मारिकाओं, पत्र-पत्रिकाओं एवं उपलब्ध रचनाओं को खोज कर उनका यथाशक्ति, यथासंभव उपयोग किया है। यथासंभव इसलिए कि इन छोटे स्थानों में अपेक्षित ग्रंथ नहीं मिल पाते। कई ग्रंथ 'आउट ऑफ प्रिंट' हो जाने से अप्राप्य या दुर्लभ है। बहुत कम रचनाकारों ने अपना परिचय दिया है-विशेषकर उन रचनाकारों का परिचय देना और भी कठिन है जिन्होंने स्फुट रचनाएँ की अथवा जिनके संग्रह प्रकाशित नहीं हो पाए। पुराने रचनाकारों के संग्रह भी अब प्राय: अनुपलब्ध है। यहाँ-वहाँ उल्लेख मिलता है। इन कठिनाइयों के बीच मैंने पूरी सजगता से सामग्री का संकलन किया है। मैंने जिन प्रमुख ग्रंथों का सहारा लिया है उनमें शिवसिंह सरोज, मिश्रबंधु विनोद, सरोज सर्वेक्षण, दिग्विजय भूषण, दीवान प्रतिपाल सिंह का बुंदेलखण्ड का इतिहास, गोरेलाल तिवारी का बुंदेलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, बुंदेल-वैभव (तीन खण्ड-गौरीशंकर द्विवेदी) सुकवि-सरोज, रामचंद्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य का इतिहास, बुंदेलीभाषा साहित्य का इतिहास (डॉ. रामनारायण शर्मा), रीतिकाल के विस्मृत कवि (डॉ. रामाधार शर्मा), बुंदेलखण्ड का बृहद इतिहास (डॉ. के.पी. त्रिपाठी), बुंदेलखण्ड की लोकसंस्कृति का इतिहास (डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त), बुंदेलखण्ड के अज्ञात रचनाकार (डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया), रीतिकाल संबंधी इतिहास ग्रंथ, नागरी प्रचारिणी सभा की प्राचीन ग्रंथों की विवरणिका, बुंदेल वैभव का साहित्य विशेषांक (सम्पादक डॉ. बरसैंया), बुंदेलखण्ड की छंद-बद्ध काव्य परम्परा (सं. डॉ. बहादुर सिंह परमार व के.एल. पटेल), बुंदेली और बुंदेलखण्ड से संबंधित अनेक ग्रंथ, छतरपुर जिले के प्राचीन गजेटियर, प्राचीन व नई पत्र-पत्रिकाएँ, बुंदेली काव्य परम्परा (बुंदेलीपीठ, सागर वि.वि.) तथा कृष्णकवि के इतिहास ग्रंथ आदि उल्लेखनीय है।

दु:खद पक्ष यह है कि पुराने ग्रंथों, ग्रंथकारों, स्फुट रचनाकारों-कलाकारों के बारे में प्राय: जानकारी नहीं मिलती। एक तो पुराने ग्रंथ बहुत कम संख्या में छपे। जो छपे वे भी बहुत कम देखने को मिल पाते हैं। अप्रकाशित ग्रंथों की स्थिति तो और भी खराब है। कहीं नाम मिलता है तो

ग्रंथ की जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथ है तो ग्रंथकार का विवरण नहीं। कहीं दोंनों ही लापता है। दूरस्थ अंचल होने के कारण छतरपुर जिले के रचनाकारों के नाम और संदर्भ हिन्दी के प्रकाशित साहित्य ग्रंथों में प्राय: नहीं मिलते। यही नहीं रचनाकारों के वंशजों से भी उनके बारे में जानकारी नहीं मिल पाती। कई जगह सन्-संवत् गलत दिए गए हैं या अनुमान से लिखे गए हैं। नामों में भी अंतर है, फिर भी इतना संतोष अवश्य है कि जिले के साहित्यकारों की सूची में प्राय: सभी नाम आ गए हैं। मैंने इस ग्रंथ में अधिकाधिक रचनाकारों को सूचीबद्ध किया है क्योंकि साधारण से साधारण को भी शामिल करने का निर्देश था।

मैं यह दावा तो नहीं कर सकता कि यह जिले की पूरी और प्रामाणिक सूची है। जानकारी के अभाव में अज्ञानतावश कई नाम छूट गए होंगे। दिए गए विवरणों में भी त्रुटियाँ हो सकती है। शोध का कार्य निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसमें नई जानकारी जुड़ती रहती है। नये संशोधन होते रहते हैं। इस कार्य को प्रारंभिक व्यवस्थित कार्य माना जाना चाहिए। आगे आने वाले शोधार्थी अपना योगदान बराबर करते रहेंगे। अभी तक प्राय: समग्र बुंदेलखण्ड के संदर्भ में आकलन होता रहा है। पहली बार जिले की सीमा को केंद्र में रख कर कार्य किया गया है। इस दृष्टि से यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

फिर भी जिन कुछ लोगों ने इस कार्य में सहयोग किया उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मेरा कर्त्तव्य है। सर्वाधिक सहयोग मिला श्री शिव भूषण सिंह गौतम से। इन्होंने प्रारंभ से अंत तक साथ दिया, अन्यथा इस कार्य को पूरा करने में और विलम्ब होता। जिले के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री माधवप्रसाद श्रीवास्तव ने कई वर्षों के गजेटियर उपलब्ध कराने के साथ स्वयं इतिहास संबंधी जानकारी दी। बिजावर के श्री मनमोहन पाण्डेय ने बिजावर के कुछ साहित्यकारों की जानकारी भेजी। प्रो. बहादुर सिंह परमार ने भी सहयोग किया। उर्दू लेखकों की जानकारी एकत्र करने में श्री हसमत छतरपुरी ने मदद की। गजेटियर में दिए गए अधिकतर चित्र महाराजा महाविद्यालय छतरपुर के कला विभाग के प्राध्यापक एवं अध्यक्ष सुधीर कुमार छारी के सौजन्य से

प्राप्त हुए। कुछ चित्र मेरे अपनी निजी संग्रहालय से दिए हैं। इन सबका तथा उन सभी ग्रंथकारों, पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग देने वालों का आभारी हूँ जिनका मैंने उपयोग किया है।

अंत में मध्यप्रदेश शासन संस्कृति-विभाग व साहित्य अकादमी को इस अनूठी मौलिक योजना के लिए बधाई देता हूँ। इस गजेटियर से आने वाली पीढ़ी को ऐसी महत्त्वपूर्ण अमूल्य संपदा मिलेंगी जो उनका सतत् मार्गदर्शन करती रहेगी।

–डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
12, एम.आई.जी, चौबे कॉलोनी,
छतरपुर (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

छतरपुर जिले का इतिहास // 11
छतरपुर जिले का भूगोल // 18
छतरपुर जिले के अन्य दर्शनीय स्थल // 22
छतरपुर जिले के महल और गढ़ियाँ // 24
छतरपुर जिले के पुस्तकालय // 27
छतरपुर जिले की प्रमुख साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाएँ // 30
छतरपुर जिले में शैक्षणिक संस्थान // 34
छतरपुर जिले में पत्रकारिता की परम्परा // 37
छतरपुर जिले की रामलीलाएँ // 38
छतरपुर में प्रचलित लोकधर्म एवं लोक जीवन // 40
लोक संस्कृति, भाषा और साहित्य // 45
छतरपुर जिले की साहित्यिक परम्परा // 50
छतरपुर जिले में संस्कृत के साहित्यकार // 58
छतरपुर जिले के हिन्दी के साहित्यकार // 64
पूर्व के स्फुट रचनाकार // 141
वर्तमान के स्फुट रचनाकार // 151
छतरपुर जिले के उर्दू के रचनाकार // 152
प्रवासी रचनाकार // 163
छतरपुर जिले की महिला साहित्यकार // 171

साहित्य अकादमी

संस्कृति परिषद्, मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग
संस्कृति भवन, बाणगंगा रोड, भोपाल-४६२००३
दूरभाष : ०७५५ - २५५७९४२

मध्यप्रदेश माध्यम/2018
सुपर प्रिंटर्स, भोपाल